अथवा

महादेवी वर्मा के संस्मरण लेखन की अभिव्यक्तिगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

5. महादेवी वर्मा की कविता 'कौन तुम मेरे हृदय में' की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मेरा परिवार' संस्मरणात्मक निबंध के आधार पर महादेवी वर्मा के परिवार का परिचय दीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7×7=14)

(क) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता की मूल संवेदना

(ख) महादेवी वर्मा का सौंदर्यबोध

(ग) नीलू कुत्ता

(घ) महादेवी वर्मा के गीत

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 10053 **K**

Unique Paper Code : 2053100019

Name of the Paper : Mahadevi Verma (महादेवी वर्मा)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – NEP**

Semester : VII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **(कोई दो)** (8+8=16)

(क) कौन तुम मेरे हृदय में?
कौन मेरी कसक में नित
मधुरता भरता अलक्षित?
कौन प्यासे लोचनों में
घुमड़ घिर झरता अपरिचित?

स्वर्ण-स्वप्नों का चितेरा

नींद के सूने निलय में!

कॉन तुम मेरे हृदय में?

(ख) जब स्त्री का व्यक्तित्व उसके पति से स्वतंत्र नहीं माना जाता था तब वे कहती हैं, मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है। फिर चाहे वह स्त्री-शरीर के अन्दर निवास करती हो चाहे पुरुष-शरीर के अन्दर। इसी से पुरुष और स्त्री का अपना-अपना व्यक्तित्व अलग-अलग रहता है। जब परिवार और समाज की सत्ता के विरुद्ध कुछ कहना अधर्म माना जात्ता था तब वे कहती हैं, समाज और परिवार व्यक्ति को बंधन में बाँधकर रहते हैं। ये बंधन देशकालानुसार बदलते रहते हैं और उन्हें बदलते रहना चाहिए वरना वे व्यक्तित्व के विकास में सहायता करने के बदले बाधा पहुंचाने लगते हैं। बंधन कितने ही अच्छे उद्देश्य से क्यों न नियत किये गये हों, हैं बंधन ही, और जहां बंधन हैं वहाँ असंतोष है तथा क्रान्ति है।'

(ग) उसने निश्चय किया कि वह उस आवुकता को आमूल नष्ट कर डालेगी, जिसका आश्रय लेकर पुरुष उसे रमणी समझता है, उस गृह-बंधन को छिन्न-भिन्न् कर देगी जिसकी सीमा ने उसे पुरुष की भार्या बना दिया है और उस कोमलता का नाम भी न रहने देगी जिसके कारण उसे बाहय जगत के कठोर संघर्ष से बचने के लिये पुरुष के निकट रक्षणीय होना पड़ा है। स्त्रीं ने सामूहिक रूप से जितना पुरुष जाति को दिया उतना उससे पाया नहीं, यह

निर्विवाद सिद्ध है, पर इस आदान-प्रदान की विषमता के मूल में स्त्री और पुरुष की प्रकृति भी कार्य करती है, यह न आलना चाहिए। स्त्री अत्यधिक त्याम इसलिए नहीं करती, अत्यधिक सहनशील इसलिए नहीं होती कि पुरुष उसे हीन समझ कर इसके लिए बाध्य करता है। यदि हम ध्यान से देखेंगे तो ज्ञात होगा कि उसे ये गुण मातृत्व की पूर्ति के लिए प्रकृति से मिले हैं।

2. छायावाद को परिआषित करते हुए महादेवी वर्मा के योगदान को विश्लेषित कीजिए। (15)

अथवा

'छायावाद ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन।' इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।

3. महादेवी वर्मा की काव्य कला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

महादेवी वर्मा की विरह-वेदना हिंदी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट निधि है, विश्लेषित कीजिए।

4. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की काव्यगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। (15)

P.T.O.